

Code No. 7211

Roll No.

SET : C

D. El. Ed. 1st Year Exam., September – 2025

Proficiency in Sanskrit Language

संस्कृत भाषा में प्रवीणता

(Course Code : DE-111)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

[Evening Session]

Time : 2 Hours]

[Max. Marks : 35

समय : 2 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 35

सामान्य निर्देश :

- (i) कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 4 तथा प्रश्न 6 हैं।
- (ii) प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिये गये कोड नम्बर तथा सेट को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख्य-पृष्ठ पर लिखें।
- (iii) कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- (iv) उत्तर-पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/पन्ने न छोड़ें।
- (v) उत्तर-पुस्तिका के अतिरिक्त कोई अन्य शीट नहीं मिलेगी। अतः आवश्यकतानुसार ही लिखें और लिखा उत्तर न काटें।
- (vi) परीक्षार्थी अपना रोल नं० प्रश्न-पत्र पर अवश्य लिखें। रोल नं० के अतिरिक्त प्रश्न-पत्र पर अन्य कुछ भी न लिखें और वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तरों पर किसी प्रकार का निशान न लगाएँ।
- (vii) कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व सुनिश्चित कर लें कि प्रश्न-पत्र पूर्ण व सही है, परीक्षा के उपरान्त इस सम्बन्ध में कोई दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा।

निर्देशाः –

- (क) सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः सन्ति।
- (ख) लेखः सुस्पष्टः सुवाच्यश्च भवेत्।
- (ग) प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां देयानि।
- (घ) प्रश्नसंख्या अवश्यमेव लेखनीया।

7211/(Set : C)

P. T. O.

भाग - 'क'

1. अधस्तनेषु यथेच्छं **प्रश्नद्वयं** समाधेयम् - 2 × 3 = 6
 (क) भाषायाः विभिन्नरूपाणि प्रतिपाद्यताम्।
 (ख) संस्कृतभाषायाः वैशिष्ट्यं प्रकटयत।
 (ग) लेखनकौशलस्य आवश्यकतां वर्णयत।
2. **एकः** प्रश्नः समाधेयः - 1 × 3 = 3
 (क) गद्यपाठयोजनायाः सोपानानि प्रकाशयन्ताम्।
 (ख) पूर्वज्ञानस्य आवश्यकतां वर्णयत।
3. **एकः** प्रश्नः समाधेयः - 1 × 3 = 3
 (क) सन्धेः सोदाहरणं परिभाषां वर्णयत।
 (ख) 'अस्' धातोः 'लृट्'लकाररूपाणि प्रतिपाद्यत।
4. **एकः** प्रश्नः समाधेयः - 1 × 3 = 3
 (क) वैदिकवाङ्मयस्य स्वरूपं वर्णयत।
 (ख) श्रीमद्भगवद्गीतायाः महत्त्वं प्रतिपाद्यताम्।
5. **एकः** प्रश्नः समाधेयः - 1 × 5 = 5
 (क) वेदाङ्गसाहित्यस्य अनिवार्यतां प्रतिपादयत।
 (ख) रामायणस्य महत्त्वं प्रतिपाद्यताम्।

भाग - 'ख'

6. अधस्तनेषु **शुद्धं** विकल्पं चित्वा लिखत - 15 × 1 = 15
 (क) संस्कृतभाषायाः भाषापरिवारो वर्तते -
 (i) भारोपीयः (ii) काकेशियनः
 (iii) अमरीकी (iv) बण्टुः

- (ख) क्रमदृष्ट्या द्वितीयं कौशलं वर्तते -
- | | |
|-------------|-------------|
| (i) श्रवणम् | (ii) वाचनम् |
| (iii) पठनम् | (iv) लेखनम् |
- (ग) 'करिष्यामि' इत्यत्र कः लकारो वर्तते ?
- | | |
|------------|-----------|
| (i) लट् | (ii) लृट् |
| (iii) लोट् | (iv) लङ् |
- (घ) 'लतया' इति पदे विभक्तिः वर्तते -
- | | |
|--------------|---------------|
| (i) प्रथमा | (ii) द्वितीया |
| (iii) तृतीया | (iv) चतुर्थी |
- (ङ) 'ल' इत्यस्य उच्चारणस्थानं वर्तते -
- | | |
|--------------|------------|
| (i) दन्त्यः | (ii) तालुः |
| (iii) मूर्धा | (iv) ओष्ठः |
-
- (च) 'संस्कृतम्' इति पदे उपसर्गः वर्तते -
- | | |
|----------|----------|
| (i) स | (ii) सम् |
| (iii) सह | (iv) सु |
- (छ) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इत्यस्य कः लेखकः ?
- | | |
|--------------|---------------|
| (i) कालिदासः | (ii) बाणभट्टः |
| (iii) भारविः | (iv) अश्वघोषः |
- (ज) स्वरसन्धौ विकारो भवति -
- | | |
|--------------------|--------------------|
| (i) विसर्गे | (ii) स्वरवर्णे |
| (iii) व्यञ्जनवर्णे | (iv) अनुस्वारवर्णे |
- (झ) रमायणस्य लेखकः कः ?
- | | |
|----------------|----------------|
| (i) वाल्मीकिः | (ii) वेदव्यासः |
| (iii) कालिदासः | (iv) भारविः |

- (ज) 'देवः' इत्यत्र का विभक्तिः ?
- | | |
|--------------|---------------|
| (i) प्रथमा | (ii) द्वितीया |
| (iii) तृतीया | (iv) चतुर्थी |
- (ट) 'वाक्यविन्यासाय' समुचितो विधिरस्ति -
- | | |
|----------------|-------------------------|
| (i) श्रुत लेखः | (ii) अनुलिपिः |
| (iii) सुलेखः | (iv) उक्ताः सर्वे विधयः |
- (ठ) वेदाः कति सन्ति ?
- | | |
|-------------|-----------|
| (i) चत्वारः | (ii) पञ्च |
| (iii) षट् | (iv) सप्त |
- (ड) श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति ?
- | | |
|----------|---------|
| (i) 18 | (ii) 19 |
| (iii) 21 | (iv) 20 |

- (ढ) काव्येषु रम्यं भवति -
- | | |
|--------------|-------------------|
| (i) गद्यम् | (ii) पद्यम् |
| (iii) नाटकम् | (iv) नास्ति किमपि |
- (ण) 'रामस्य पिता कः आसीत् ?
- | | |
|--------------|----------------|
| (i) दशरथः | (ii) वेदव्यासः |
| (iii) भारविः | (iv) रत्नाकरः |
-